विशिष्टाद्वैत-सिद्धान्त-समेत

श्रीगोस्वामीतुलसीदासकृत

श्रीरामचरितमानस

'सिद्धान्त-भाष्य'

३

[अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड]

भाष्यकार

श्री श्रीकान्तशरण

समस्त तुलसी साहित्य के विशद व्याख्याकार

श्रीसद्‌गुरु कुटी, गोलाघाट, श्री अयोध्याजी

सम्पादक

आचार्य श्रीरामलोचनशरण

मैथिली श्रीरामचरितमानस

एवं

मैथिली में समस्त तुलसी साहित्य के रचयिता

東京外国語大学
49. 3. 30
図書館蔵書

पुस्तक-भंडार, पटना-४

प्रकाशक
पुस्तक-भंडार,
पटना–४

सर्वस्वत्व प्रकाशकाधीन

मुद्रक
श्री हिमालय प्रेस
पटना–४

॥ श्रीसीतारामाभ्यां नमः ॥

श्रीरामचरितमानस

(सिद्धान्त-भाष्य)

की

विषय-सूची

अरण्यकाण्ड

विषय			*पृष्ठ-संख्या*
मङ्गलाचरण	...	...	१६३
'बन बसि कीन्हें चरित अपारा'-प्रकरण	...	...	१६७
'सुरपति-सुत-करनी'-प्रकरण	...	...	१६९
'प्रभु अरु अत्रि भेंट'-प्रकरण	...	...	१७७
'बिराध-बध'-प्रकरण	...	...	१९५
शरभंग देह-त्याग-प्रकरण	...	...	१९८
'बरनि सुतीछन-प्रीति पुनि'-प्रकरण	...	...	१६०२
'प्रभु-अगस्ति-सत्संग'-प्रकरण	...	...	१६१५
दंडक-वन-पावनता, गीध-मैत्री एवं पंचवटी-प्रकरण	...	...	१६२२
'पुनि लछिमन उपदेस अनूपा'-प्रकरण (श्रीराम-गीता)		...	१६२४
'सूपनखा जिमि कीन्ह कुरूपा'-प्रकरण	...	...	१६३९
'खर-दूषन-बध'-प्रकरण	...	...	१६४५
'जिमि सब मरम दसानन जाना'-प्रकरण	...	...	१६५८
'पुनि माया सीता कर हरना'-प्रसंग	...	...	१६६५
सीता-हरण के हेतु	...	...	१६८४
'श्रीरघुबीर-बिरह-बर्णन'-प्रकरण	...	...	१६९३
'पुनि प्रभु गीध-क्रिया जिमि कीन्हीं'-प्रकरण	...	...	१६९७
कबंध-बध-प्रकरण	....	...	१७०६
'सबरी गति दीन्हीं'-प्रकरण	...	...	१७०९
'बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा । जेहि बिधि गये सरोबर-तीरा ॥'-प्रकरण		...	१७२०
'प्रभु-नारद-संबाद'-प्रकरण	...	...	१७३१

किष्किन्धाकाण्ड

विषय			पृष्ठ-संख्या
मङ्गलाचरण	...	...	१७४९
'मारुति-मिलन'-प्रकरण	...	...	१७५४
श्रीहनुमानजी की कथा	...	...	१७६१
'सुग्रीव-मिताई'-प्रकरण	...	...	१७६७
बालि और सुग्रीव	...	....	१७७३
मायावी और दुन्दुभी	....	...	१७७३
'बालि-प्रान-कर-...ग'-प्रकरण	...	...	१७७६
बालि-वध-रहस्य	...	...	१७९४
मानस में पञ्चसंस्कार	...	...	१८०१
सुग्रीव-राज्याभिषेक-प्रकरण	...	...	१८०६
शैल-प्रवर्षण-वास-प्रकरण	...	...	१८१०
'बरनत बरषा'-प्रकरण	...	...	१८१२
शरद्-वर्णन-प्रकरण	...	...	१८२३
'वर्षा और शरद-ऋतु के वर्णन में विविध विषय' (मानस तत्त्व भास्कर)			१८३१
'राम-रोष कपित्रास'-प्रकरण	...	...	१८३२
'जेहि बिधि कपिपति कीस पठाये'-प्रकरण	...	...	१८४२
'सीता-खोज सकल दिसि धाये'-प्रकरण	...	...	१८५०
'बिवर प्रवेस'-प्रकरण	...	..	१८५१
संपाति-मिलाप-प्रकरण	...	...	१८५४
'सुनि सब कथा समीर कुमारा'-प्रकरण	...	...	१८६४

सुन्दरकाण्ड

विषय			पृष्ठ-संख्या
मलङ्गाचरण	...	...	१८७३
'लाँघत भयउ पयोधि अपारा'-प्रकरण	...	...	१८७७
'लंका कपि प्रवेश जिमि कीन्हा'-प्रकरण	...	...	१८९१
समुद्र-लंघन-रहस्य	...	...	१८९३
'पुनि सीतहिं धीरज जिमि दीन्हा'-प्रकरण	...	....	१९०६
'बन उजारि रावनहिं प्रबोधी'-प्रकरण	...	...	१९३७
सहस्रबाहु और रावण	...	...	१९५१
बालि और रावण	...	...	१९५२
'पुर दहि नाँघेउ बहुरि पयोधी'-प्रकरण	...	...	१९५८
'आये कपि सब जहँ रघुराई'-प्रकरण	...	...	१९७४
'बैदेही कै कुसल सुनाई'-प्रकरण	...	...	१९७९
'सेन समेत जथा रघुबीरा। उतरे जाइ बारिनिधि-तीरा ॥'-प्रकरण		...	१९९३
'मिला बिभीषन जेहि बिधि भाई'-प्रकरण	...	...	२०००
मंदोदरी का उपदेश (१)	...	...	२०००
शरणागति के अंग	...	...	२०३९
'सागर- निग्रह-कथा'-प्रकरण	...	...	२०४८
आवृत्तियों द्वारा सिंहावलोकन	...	...	२०६३

संकेत-सूची

अ०—अयोध्याकाण्ड तथा अध्याय
अर०—अरण्यकाण्ड
उ०—उत्तरकाण्ड
क०—कवितावली रामायण
कि०—किष्किन्धाकाण्ड
गी०—गीतावली रामायण
गीता—श्रीमद्भगवद्गीता
चौ०—चौपाई
तै०+तैत्त०—तैत्तरीयोपनिषत्
दो०—दोहा
छां०, छांदो०—छान्दोग्योपनिषत्
मुं०, मुंड०—मुण्डकोपनिषत्
भाग०, श्रीमद्भाग०—श्रीमद्भागवत
वाल्मी०—श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण
श्वे०, श्वेता०—श्वेताश्वतरोपनिषत्
कौषी०—कौषीतकि ब्राह्मणोपनिषत्
मं०—मङ्गल एवं मङ्गलाचरण
लं०—लङ्काकाण्ड
सुं०—सुन्दरकाण्ड
सो०—सोरठा

बा०—बालकाण्ड
ब्र० सू०—ब्रह्मसूत्र (वेदान्त)
बृ०, बृह०—बृहदारण्यकोपनिषत्
का०, कठ०—कठोपनिषत्
मनु०—मनुस्मृति
महा०—महाभारत
स०—सर्ग
वि०—विशेष
वि० पु०—विष्णुपुराण

नोट—दो०=दोहा, दोहा की संख्या से आगे की चौपाइयाँ भी उसीसे सम्बद्ध मानी गई हैं। कोई-कोई दोहे की संख्या से उससे पूर्व की चौपाइयाँ ही लेते हैं। इस ग्रन्थ में वैसी गणनाएँ भी कहीं-कहीं लिखी गई हैं। छन्द प्रायः जिस दोहे के पूर्व होते हैं; उसीके साथ गिने गये हैं। पर, कहीं-कहीं दोहे के आगे दिये हुए छन्द भी दोहे के साथ ले लिये गये हैं। अतः, उभय प्रकार की गणनाएँ ठीक ही हैं।

श्रीरामचरितमानस

(सिद्धान्त-भाष्य)

तृतीय सोपान (अरण्यकाण्ड)

मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं
वैराग्याम्बुजभास्करं ह्यघघनध्वान्तापहं तापहम्।
मोहाम्भोधरपूगपाटनविधौ स्वःसम्भवं शङ्करं
वन्दे ब्रह्मकुलं कलङ्कशमनं श्रीरामभूपप्रियम् ॥ १ ॥

अर्थ—धर्म-रूपी वृक्ष के मूल, विवेक-रूपी समुद्र के आनन्द देनेवाले पूर्णचन्द्रमा, वैराग्य-रूपी कमल के (विकासक) सूर्य, पाप-रूपी सघन अन्धकार का निश्चय ही नाश करनेवाले, (दैहिक, दैविक और भौतिक) तापों का हरण करनेवाले, मोह-रूपी मेघों के समूह को विच्छिन्न (उत्पाटन) करने की विधि में वायु-रूप, शं (कल्याण) के करनेवाले, ब्रह्म-कुल, कलंक का शमन करनेवाले और राजा श्रीरामजी के प्यारे (वा, जिनको राजा श्रीरामजी प्रिय हैं, उन) श्रीशिवजी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥१॥

विशेष—(१) 'मूलं धर्म तरोः'—धर्म (कर्म) में फल लगता है, इसीलिये उसे वृक्ष-रूप कहा, श्रीशिवजी उस वृक्ष की जड़ हैं। जड़ के बिना कोई भी वृक्ष खड़ा नहीं रह सकता और जड़ ही के सींचने से वह वृक्ष सर्वाङ्गों से हरा-भरा रहता है। वैसे ही श्रीशिवजी से धर्म की उत्पत्ति, पालन एवं वृद्धि होती है। धर्म के चार चरण—सत्य, दया, तप और दान हैं, यथा—"चारिउ चरन धरम जग माहीं। पूरि रहा सपनेहु अघ नाहीं॥" (उ० दो० २०)—देखिये। इन चारो में सब धर्म (सुकृत) आ जाते हैं। 'विवेक जलधेः·····'—ज्ञान अगाध है, इसलिये समुद्र की उपमा दी गई है, यथा—"गुरु बिबेक सागर जगजाना।" (दो० १८१), "ज्ञान अंबुनिधि आपुन आजू।" (दो० २९२), भाव यह कि श्रीशिवजी के दर्शनों एवं ध्यान से विवेक बढ़ता है। 'वैराग्याम्बुजभास्करं'—वैराग्य से संग-दोष छूटता है। अतः, उसे कमल कहा, यथा—"पदुम पत्र जिमि जग जल जाये।" (दो० ३१६), कमल जल से निर्लिप्त रहता है, इसे वैराग्यवान् विषय-वारि से निस्संग रहता है। भाव यह कि श्रीशिवजी का ध्यान वैराग्य का पोषक है। 'अघघनध्वान्तापहं'—'ध्वान्त'=अन्धकार, यथा—"अन्धकारोऽस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः।" (अमरकोश) 'अपहं'=नाशकर्त्ता, 'तापहम्', यथा—"जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो।" (उ० दो० १०७)।

यहाँ पहले धर्म, इन्दु और भास्कर कहकर तब—'अघघन···' कहा, भाव यह कि धर्म एवं सूर्य से अघ रूपी अन्धकार का नाश, और चन्द्र से ताप का नाश होता है। धर्म से अघ का नाश होता है, यथा—"चारिहु चरन धरम जगमाहीं। पूरि रहा सपनेहु अघ नाहीं॥" (उ० दो० २०), तब चित्त शुद्ध